International Journal of Multidisciplinary Research And Studies

Available online at https://ijmras.com/

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND STUDIES
ISSN: 2640 7272
Volume:03; Issue:12 (2020)

Page no.- 10/10

□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

Jitendra Kumar*

M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16,
M.Phil ,University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur.india.
E-mail: jitendrapress5@gmail.com

लेख की जानकारी □□□

Corresponding Author:

* **Jitendra Kumar**

Email; *jitendrapress5@gmail.com*

भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृतियों का मूलाधार है। संस्कृति से तात्पर्य प्राचीन काल से चले आ रहे संस्कारों से है। मनुष्य द्वारा लौकिक–पारलौकिक विकास के लिए किया गया आचार–विचार ही संस्कृति है। सनातन परंपरा के अनुरूप संस्कार की पद्धति ही संस्कृति है। अन्य साहित्य ग्रन्थों को छोड़ दिया जाय तो प्रथम कवि द्वारा रचित रामायण के अन्तर्गत विभिन्न विषयों का अवलोकन अध्ययनोपरांत प्रत्यक्ष होने लगता है । इसी विचारधारा के अनुरूप साहित्य जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरित करती रहती है। इसी दार्शनिक सिद्धांत का अतुल भण्डार महर्षि वाल्मीकि के चरित्र में विद्यमान है । एतदर्थ महर्षि वाल्मीकि का परिचय सर्वप्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

बीज शब्द: □□□□□□ , □□□□□□□□

भूमिका

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'वाल्मीकीय रामायण एवं रामकथाश्रित नाटकों में हनुमान : एक समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत महर्षि वाल्मीकि एक परिचय जिसे आदिकवि द्वारा प्रस्तुत किया गया रामायण भारतीय संस्कृति का महान संवाहक है । चूँकि साहित्य समाज का दर्पण होता है और संस्कृति की आत्मा साहित्य के अन्दर दिखलायी देती है

। अत: संस्कृत साहित्य इस सिद्धांत को पूर्णरूप से अंगीकार करता है। संस्कृत काव्य जीवन के विषम परिस्थितियों के अन्दर आनन्दानुभव में सदा लगी रही । अन्य साहित्य ग्रन्थों को छोड़ दिया जाय तो प्रथम कवि द्वारा रचित रामायण के अन्तर्गत विभिन्न विषयों का अवलोकन अध्ययनोपरांत प्रत्यक्ष होने लगता है । इसी विचारधारा के अनुरूप साहित्य जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरित करती रहती है। इसी दार्शनिक सिद्धांत का अतुल भण्डार महर्षि वाल्मीकि के चरित्र में विद्यमान है । एतदर्थ महर्षि वाल्मीकि का परिचय सर्वप्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

परिचय

वाल्मीकीय रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं अपने को प्रचेता का पुत्र कहा है-

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन । १

मनुस्मृति में प्रचेता को वशिष्ठ, नारद, पुलस्त्य आदि की श्रेणी में रखा गया है । प्रचेता का नाम ब्रह्मा भी है—

प्रचेतसं वशिष्ठं च भृगुं नारदमेव च ।

स्कन्दपुराण के वैशाख महात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याध बताया गया है । इससे सिद्ध होता है कि जन्मान्तर में ये व्याध थे । व्याध जन्म के पहले भी स्तम्भ नाम के श्रीवत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे । व्याध जन्म में शङ्ख ऋषि के सत्सङ्ग से रामनाम के जप से ये दूसरे जन्म में अग्नि शर्मा हुए, जिनका दूसरा नाम रत्नाकर भी था । वहाँ भी व्याधों के सङ्ग के कारण प्राक्तन संस्कारवश व्याधकर्म में लग गये । फिर सप्तर्षियों के सत्सङ्ग से मरा-मरा जपकर - बांबी पड़ने से वाल्मीकि नाम से ख्यात हुए और वाल्मीकि रामायण की रचना की । बंगला के कृतिवास रामायण, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण तथा भविष्यपुराण में भी उपर्युक्त प्रसंग का उल्लेख थोड़ा हेर-फेर करके मिलता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

उल्टा नाम जपत जग जाना ।

बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना । ।

पण्डित वैद्यनाथ द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक' में लिखा है कि- 'महर्षि वाल्मीकि के सम्बन्ध में रामायण में मुनि मुनि पुंगव, ऋषि, महर्षि, ऋषिसत्तम, तपस्वी आदि गुणवाचक शब्दों का प्रयोग हुआ है, किन्तु उनके जातिवाचक किसी शब्द का सुस्पष्ट आख्यान नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता । क्योंकि वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड के सत्तानबेवें सर्ग के–

प्रत्ययस्तु मम ब्रह्मस्तव वाक्यैरकल्मषैः ।

सेयं लोकभयाद् ब्रह्मन् अपापेत्यभिजानता ।

इन श्लोकों में श्रीराम ने स्वयं अपने मुख से वाल्मीकि को 'ब्रह्मन्' शब्द से सम्बोधन कर उनके ब्राह्मणत्व का स्पष्ट उद्घोष कर दिया है । रामायण में बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में उल्लेख है कि भरद्वाज ऋषि महर्षि वाल्मीकि के शिष्य थे, जिन्हें अयोध्याकाण्ड में ब्राह्मण भरद्वाज कहा गया है-

स ब्राह्मणस्याश्रममभ्युपेत्य महोत्मनो देवपुरोहितस्य ।

ददर्श रम्योटजवृक्षदेश महद्वनं विप्रवरस्य रम्यम् । ।

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

उपर्युक्त श्लोक से भरद्वाज का ब्राह्मणत्व स्पष्ट प्रमाणित है । शास्त्रीय नियमानुसार कोई भी ब्राह्मण शिष्य ब्राह्मणेतर को गुरु बनाकर उससे सामान्यतया विद्याध्ययन नहीं कर सकता । ब्राह्मणेतर को विद्यादान का अधिकार भी नहीं प्राप्त है । छान्दोग्य ब्राह्मण में कहा गया है । यथा—

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम तवाहमस्मि त्वं मा

पालयानर्हते मानिनेनैव मादा गोपाय मां श्रेयसी तवाहमस्मि ।

इससे स्पष्ट है कि विद्या- दान का अधिकार यथाशास्त्र ब्राह्मण को ही है । महर्षि वाल्मीकि ने सांगवेदों का अध्यापन भारद्वाज को ही नहीं अपितु कुश, लव आदि को भी कराया था । पद्मपुराण में तो महर्षि वाल्मीकि ने 'वेदान् सांगानहं सर्वान् ग्राह्यामास भूपते इस युक्ति से स्वयं स्वीकार किया है कि मैंने कुश, लव को व्याकरण आदि सभी अङ्गों के सहित चारों वेदों का अध्ययन कराया है । इस प्रकार अर्थापत्ति आदि प्रमाणों के आधार पर भी महर्षि वाल्मीकि का ब्राह्मणत्व सिद्ध हो जाता है ।

अपि च- पद्मपुराण के पातालखण्ड का यह श्लोक भी महर्षि वाल्मीकि के विशुद्ध रूप से ब्राह्मणत्व के आख्यान हेतु उपस्थित होता है-

एकदागतवान विप्रो वाल्मीकिविपिनं महत् ।

यत्र तालस्तमालाश्च किंशुकाः पत्र पुष्पिता । ।

इस श्लोक के माध्यम से महर्षि वेदव्यास ने महर्षि वाल्मीकि के ब्राह्मणत्व का कण्ठत: आख्यान किया है । इससे यह भी सिद्ध होता है कि इनकी उत्पादक परम्परा भी विशुद्ध रूप से ब्राह्मण ही रही । क्योंकि 'ब्राह्मण-ब्राह्मणी से जो सन्तान उत्पन्न होती है वही ब्राह्मण हो सकता है ।' ऐसा शास्त्रों का प्रबल उद्घोष है—

सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि स जातयः ।

तथा - सर्व वर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षत योनिषु ।

आतुलोम्येन संभूता जात्वा ज्ञेयास्त एव ते ।।

आदि के द्वारा मनु-याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों ने स्पष्ट व्यवस्था दी है कि – विधिवत् विवाहित सजातीय पत्नी में स्वद्वारा उत्पादित सन्तान ही सजातीय हो सकती है, अन्य नहीं । तात्पर्य यह है कि इनके माता-पिता भी ब्राह्मण ही थे । अत: वाल्मीकि को निम्न जाति का मानना सर्वथा अनुचित है ।

अक्षय कुमार बन्द्योपाध्याय के अनुसार - 'पूर्वजन्म के प्रभाव से जो रत्नाकर डाकू थे, वे ही महापुरुष के सङ्ग के प्रभाव से महर्षि वाल्मीकि हो गये । उनकी दस्युता साधु के प्राणों पर आघात करने जाकर स्वयं साधुता में परिणित हो गई । वे इतने दिनों तक कामिनी काञ्चन में आसक्त थे । दूसरों को पीड़ित करने और उनका धन लूटने में ही उन्हें आनन्द मिलता था । उनकी वह आसक्ति और आनन्द महापुरुष की कृपा से तिरोहित हो गया । वे सत् चित् शिवानन्द रस का संधान पाकर उसमें निमज्जित हो गये । संसार को भूलकर, शरीर को भूलकर और अपने पूर्वजन्म की सारी स्मृतियाँ मिटा कर वे अपने में ही डूब गये ।

अपनी अन्तरात्मा के भीतर ही निखिल-रसामृत सिन्धु का आस्वादन करने लगे । इस आस्वादन से जब उनका हृदय परितृप्त हो गया तब उस आनन्द को संसार में वितरित करने के लिए उनका प्राण आकुल हो उठा । उन्होंने अपने हृदय द्वारा विश्व के हृदय में जिस नित्य सत्वित्घन प्रेमानन्दमय रसनिर्झर की दिव्यानुभूति प्राप्त की, उसी रसधारा से जगत के सभी श्रेणियों के स्त्री-पुरुषों के हृदय को पूत परिप्लुत और सुस्निग्ध करने की लालसा से वे उन्मत्त हो गये । अपना आन्तरिक आनन्द वितरित करके विश्व के सकल नर-नारियों का जीवन आनन्दमय बनाने की महती

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

कामना ने उनके चित्त को आविष्ट कर लिया । वे ध्यान समाधि के उच्च शिखर से साधारण ज्ञानभूमि पर अवतीर्ण हुए। विश्व के प्रति अहैतुक प्रेम, आनन्दभिक्षु विभ्रान्तदृष्टि आत्मविस्मृत नर-नारी के प्रति हार्दिक सम्वेदना, सम्पूर्ण दुःखी नर-नारियों को अपने अन्तरानन्द का भागी बनाने के लिए आकुल आग्रह- इन सबने ध्यानमग्न ऋषि का ध्यान भंग कर उन्हें मुखर कर दिया, उन्हें आदिकवि बनाकर छोड़ा । सच्चित्शिवानन्दप्रिया देवी सरस्वती ने महर्षि के मन और वाणी को आविष्ट कर लिया । महर्षि महाकवि हो गये - विधाता के अचिन्तनीय विधान से वे भारतीय संस्कृति के आदि महाकवि हुए ।

जीवनवृत्त

रामायण में उसके रचयिता वाल्मीकि का नाम विभिन्न स्थलों पर आया है । पर उनके जीवनवृत्त का स्पष्ट संकेत यहाँ नहीं मिलता। दूसरे स्रोतों से भी जीवनवृत्तान्त की प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है । फिर भी उपलब्ध सामग्रियों को ही एकत्र कर इनका जीवन परिचय प्राप्त किया जा सकता है । वाल्मीकि नामधारी कई व्यक्तियों का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थों में मिलता है ।

तैत्तिरीय प्रातिशाख्य में इस नाम के एक वैयाकरण का उल्लेख है । पर वाल्मीकिरचित कोई व्याकरण ग्रन्थ ज्ञात नहीं है । अत: यह आदिकवि से भिन्न कोई रहा होगा ।' पं० कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी ने प्राकृत व्याकरण के सूत्रों का व्याख्याका वाल्मीकि को माना है । पर भट्टनाथ स्वामी ने उसे त्रिविक्रम तथा पं० बलदेव उपाध्याय ने उसे रामायणकार से भिन्न वाल्मीकि स्वीकार किया है ।

वाल्मीकि के पूर्वज, बुद्ध-चरित के अनुसार, च्यवन थे । (१/४३) वाल्मीकि से महाभारत में च्यवन के पिता भृगु का उल्लेख है जो तपस्या करते हुए आच्छादित हो गये थे । सुकन्या ने उन्हें अन्धा बनाकर उनसे विवाह किया । कृत्तवासीय रामायण के अनुसार इन्हीं के पुत्र रत्नाकर थे जिन्हें व्याध कहा गया है।

आनन्द रामायण तथा स्कन्दपुराण में इनके पिता का नाम कृणु बताया गया है जो शरीर पर वल्मीकि लगने के कारण वाल्मीकि कहलाये तथा इन्हीं से वाल्मीकि नामक व्याध उत्पन्न हुआ जिससे ख्यातिप्राप्त रामकथा की रचना हुई स्कन्दपुराण के एक खण्ड में इनके पिता का नाम शमीमुख भी मिलता है तथा वाल्मीकि रामायण में प्रचेता । (७/९६/१९) रामायण में च्यवन का भी उल्लेख मिलता है जिन्हें विप्र तथा भृगु नन्दन भी कहा गया है । (७/६७/१) यहाँ भृगु-पुत्र च्यवन सम्भवत: वाल्मीकि के ही पिता हैं जैसा अन्य प्रमाणों से स्पष्ट होता है । शमीमुख तथा प्रचेता भी इनके ही दूसरे नाम लगते हैं क्योंकि दोनों का अर्थ है- तेज या चेतनायुक्त । अतः इनके पिता का नाम मूलतः च्यवन रहा होगा जिन्हें कृणु, शमीमुख, प्रचेता आदि भी कहा जाता होगा । वाल्मीकि के भी अनेक नाम मिलते हैं | विष्णुपुराण में इन्हें भार्गवाक्ष कहा गया है । (३/३/१८) महाभारत में भी भार्गव का उल्लेख है जो पहले श्लोक लिखते थे । यहीं एक दूसरे पर्व में एक पुराने कवि वाल्मीकि का भी उल्लेख मिलता है । (द्रोणपर्व ११८/४८) मत्स्यपुराण में इन्हें भार्गव सत्तम कहा गया है । (१२/६१) जैसा पहले कहा जा चुका है कृत्तवासीय रामायण में इनका नाम रत्नाकर बताया गया है । स्कन्दपुराण इनके नाम वैशाख (प्रमा० महा० अध्याय २७८) मिलते हैं । भार्गव शब्द इनके लिए प्रयुक्त नामों के साथ सम्भवत: इसलिए जोड़ा गया कि ये भृगुवंशीय थे जैसा ऊपर कहा गया है । अत: इनके पिता की तरह पहले इनके भी कक्ष, सत्तम, रत्नाकर आदि कई नाम रहे होंगे । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार यही पीछे दीमक की बांबी (वल्मीक) से आच्छादित होकर बाहर निकलने के कारण वाल्मीकि नाम से प्रसिद्ध हुए होंगे ।

इनकी जाति के सम्बन्ध में भी बड़ी अनिश्चितता है । इन्हें स्कन्दपुराण में ब्राह्मण (अध्याय २७८), द्विज (नागर खण्ड, अध्याय १४) व्याध (वैष्णव खण्ड, अध्याय २१) आदि कहा गया है । आनन्द रामायण में इन्हें एक स्थान पर ब्राह्मण तथा दूसरे स्थान पर व्याध कहा गया है । इनका प्रारम्भिक जीवन प्राय: अज्ञात है | आनन्द रामायण के अनुसार व्याध वाल्मीकि ने शंख नामक ब्राह्मण का सब कुछ लूट लिया था पर उनके फटे पैरों को देखकर उन्हें उनका जूता लौटा दिया । इस पर ब्राह्मण ने बताया कि यह व्याध पूर्वजन्म में शाकल नगर में श्रावस्ती गोत्र का स्तंभ नामक ब्राह्मण था । पीछे यह वेश्यागामी होकर शूद्राचार करने लगा । किसी दिन इसने एक ब्राह्मण का आतिथ्य किया था । इसी पुण्य कारण आज मुझसे इसकी भेंट हुई है । यह वेश्या का स्मरण करते हुए मरकर व्याध परिवार में उत्पन्न हुआ है और वही वेश्या अब इसकी पत्नी भीलनी है । यह कृणु मुनि के नेत्र से गर्भ द्वारा सर्पिणी के पेट से उत्पन्न

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

होंगे तथा किरात इनका पालन करेंगे। इनकी सात मुनियों से भेंट होगी । अध्यात्म रामायण में इसके आगे यह भी विवरण मिलता है कि इन सात मुनियों के लूटे जाने पर उन्होंने वाल्मीकि से इस पाप के भागीदारों के सम्बन्ध में पूछा । वाल्मीकि को अपने परिवार वालों से इस प्रश्न के उत्तर में ज्ञात हुआ कि जो पाप करेगा वही उसे भोगेगा । इससे उन्हें वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह मुनियों में स्थिरप्रज्ञ होकर राम नाम को उल्टाकर जपने लगे । ऐसा करते हुए उनके शरीर पर बांबी बन गई । वे मुनि पुनः जब उस रास्ते से लौटे तो वल्मीक से उन्हें निकाल कर उसका नाम वाल्मीकि रखा । यह उनका दूसरा जन्म हुआ । यही कथा नाम तथा घटनाओं के कुछ अन्तर से स्कन्दपुराण के विभिन्न खण्डों, कृत्तवासीय रामायण, महाभारत (अनुशासन पर्व) आदि में भी मिलती है।

इसके बाद का वृत्तान्त कुछ रामायण से प्राप्त होता है कि वह तमसा के तट पर जहाँ से गंगा थोड़ी दूर थीं वहीं अपने शिष्य भरद्वाज के साथ रहते थे । वहीं एक दिन स्नान के लिए जाते हुए उन्होंने एक व्याध द्वारा आहत क्रौंच पक्षी को देखा जिस पर क्रौंची विलाप कर रही थी । इस पर शोकाकुल होकर उनके मुँह से वधिक के लिए — मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः... ' श्लोक में शाप निकला जो आदिकाव्य की भूमिका बना । इसी पर विचार करते हुए कवि को नारद ने रामायण की भूमिका दी तथा ब्रह्मा ने इसकी रचना का आदेश दिया, जिनके आधार पर रामायण की रचना हुई ।

आदिकवि के आश्रम का स्थान भी बड़ा विवादास्पद है। रामायण में इसके सम्बन्ध में तीन विवरण मिलते हैं - तमसा तट पर, चित्रकूट में— जहाँ वनवासी राम वाल्मीकि से मिले थे (२/५६/१६) तथा गंगा के दक्षिण किनारे पर जहाँ निर्वासित सीता रहती थीं। (७/४७/१७) कई आश्रमों की बात विचित्र नहीं लगती क्योंकि ऋषि प्राय: घूमते रहते थे । जहाँ जाते थे वहाँ अपने लिए आश्रम बना लेते थे । जैसे— रामायण में वर्णित विश्वामित्र पहले सिद्धाश्रम में रहते थे जो पीछे हिमालय पर चले गये । (१/७४/१) डॉ० मिराशी ने चित्रकूट के आश्रम को प्रक्षिप्त माना है ।' डॉ० पी० एल० वैद्य के अनुसार भी चूँकि यह पाठ केवल दाक्षिणात्य संस्करण में पाया जाता है, अत: निर्मूल है। ऐसी दशा में जब तक इस तर्क के सम्बन्ध में और कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते तब तक इसको अन्तिम निर्णय के रूप में स्वीकार कर लेना उचित नहीं जान पड़ता । डॉ० मिराशी ने बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के विवरणों को मिलाकर इनके आश्रम के निर्धारण के लिए चार आधार बनाया है—

- आश्रम तमसा तीर पर था ।
- समीप में गंगा नदी थी ।
- गंगा के दक्षिणी तीर पर आश्रम था जहाँ निर्वासित सीता का परित्याग हुआ था ।
- अयोध्या के समीप था ।

इन आधारों पर प्रयोग से आग्नेय दिशा में १८ मील की दूरी पर उन्होंने गंगा और तमसा के संगम पर उनका आश्रम निर्धारित किया है । अन्य कई विद्वानों का भी मत इससे मिलता जुलता दीख पड़ता है पर बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के विवरण इस सम्बन्ध में परस्पर भिन्न हैं । बालकाण्ड में उनका आश्रम तमसा के किनारे वर्णित है जहाँ से गंगा दूर बताई गई है (१/२/३) । इस तमसा तट को तीर्थ कहा गया है । जिससे यह स्पष्ट नहीं होता कि पवित्र स्थल होने के कारण ऐसा माना गया है अथवा किस कारण से। डॉ० एल०एन० डे ने कानपुर से १४ मील दूर बिठूर में इसे स्वीकार किया है । २ पर डॉ० मिराशी ने इसकी बड़ी विद्वतापूर्ण आलोचना अपने लेख में की है । कुछ विद्वानों ने तो अमृतसर के पास रामतीर्थ नामक स्थान तथा किन्हीं ने भारत नेपाल सीमा पर स्थित वाल्मीकिनगर में इसकी स्थिति स्वीकार की है, जो भौगोलिक विवरणों के आधार पर बेमेल लगते हैं । बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के विवरण इस सम्बन्ध में परस्पर भिन्न हैं । यहाँ ऋषियों के आश्रमों का वर्णन नहीं है । पर उत्तरकाण्ड में गंगा किनारे ऋषि आश्रमों के बीच उनका वर्णन मिलता है | अतः ये दो आश्रम लगते हैं जिनमें पहले रामायण की रचना हुई थी तथा दूसरे में निर्वासित सीता रहती थी, तथा लवकुश का जन्म हुआ था। वहीं उन्हें रामायण सुनाने का उपदेश भी दिया गया था। पहला आश्रम बालकाण्ड – उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद में हो सकता है जो तमसा के तट पर बसा है तथा यहाँ से गंगा थोड़ी दूर हैं । यह वन्य प्रदेश धर्मारण्य में था । यह अत्यन्त पवित्र स्थान था । पद्मपुराण

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

के अनुसार गंगा के उत्तरतट दर्दर क्षेत्र में (आधुनिक बलिया जनपद) वाल्मीकि रहते थे । आज भी यहाँ वालेश्वर घाट पर पुरातन वाल्मीकि मन्दिर की परम्परा में एक मन्दिर स्थित है । अत: रामायण की रचना जहाँ पर की गई थी, बालकाण्ड में वर्णित आश्रम बलिया में रहा होगा ।

दूसरा आश्रम उत्तरकाण्ड का, जहाँ लव - कुश का जन्म हुआ था तथा उन्हें रामायण का उपेदश दिया गया था, जैसा डॉ० मिराशी का विचार ऊपर वर्णित है, प्रयाग के पास गंगा के दक्षिणी तट पर रहा होगा। यदि ये दोनों एक ही होते तो रामायण की रचना से पूर्व वह राम-राम से परिचित रहे होते। फिर उन्हें नारद तथा ब्रह्मा की बात सुनकर रामायण की रचना करने में हिचकिचाहट क्यों हुई होती । लेकिन इसके सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय लेना सम्भव नहीं जान पड़ता । कुछ लोग इसे ईस्वी सन् से दो चार शताब्दी की कृति मानते हैं । इसके पद विन्यास आदि को देखकर कोई पाणिनि के बाद की रचना कहता है तो कोई महाभारत के बाद की । वाल्मीकि ने स्वयं रामायण के उत्तरकाण्ड में, श्रीराम के यज्ञ में अपने हृष्ट-पुष्ट दो शिष्यों अर्थात् कुश और लव से कहा- तुम दोनों भाई एकाग्रचित्त हो सब ओर घूम-फिर कर बड़े आनन्द के साथ सम्पूर्ण रामायण काव्य का गान करो-

स शिष्यावब्रवीद्धृष्टौ युवां गत्वा समाहितो ।

कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां परमा मुदा ।।

तपस्वी वाल्मीकि

वाल्मीकि रामायण में उपनिबद्ध कथा के अनुसार देवर्षि नारद के मुख से श्रीरामचरित्र को सुनकर, उनको यथावत् सम्मानित करके, महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें विदा किया। उनके देवलोक पधारने के दो ही घड़ी बाद महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर गये, जो गङ्गा जी से अधिक दूर नहीं था । तामसहारिणी तमसा कल-कल करती हुई बह रही थी । उसका पावन तट वृक्षों की स्निग्ध छाया से शीतल था । तीर्थ में न तो पङ्क कलङ्क की तरह चिपका था और न शैवाल दुष्ट जनों की चित्तवृत्ति के समान उसे कलङ्कित कर रहा था । मनोभिराम जल सज्जनों की चित्त की भाँति नितान्त प्रसन्न था । महर्षि के हृदय को इस दृश्य ने लुभा लिया । उन्होंने अपने प्रधान शिष्य भरद्वाज से कहा कि भरद्वाज यह तमसा का तीर्थ प्रसन्न जल से परिपूर्ण साधुपुरुष के मन के समान रमणीय है । यहाँ क्लेश को रख दो और वल्कल वस्त्र मुझे दे दो मैं इसमें स्नान करना चाहता हूँ-

न्यस्यतां क्लशस्तात दीयतां वल्कलं मम ।

इदमेवावगाहिष्ये तमसातीर्थमुत्तमम् ।।

महर्षि से आदिष्ट होकर शिष्य ने वैसा ही किया जैसा कि उन्हें अभीष्ट था। उन्होंने स्नानकर, वल्कल पहन विशाल शान्तवन की शोभा देखते हुए भ्रमण करना शुरू किया । उनकी दृष्टि स्वच्छन्द विहरणशील क्रौंच मिथुन पर पड़ी जो कि रतिभाव से परस्पर समासक्त होकर मधुर ध्वनि कर रहे थे । उसी समय पापपूर्ण विचार रखने वाले एक निषाद ने, जो समस्त जन्तुओं का अकारण बैरी था, वहाँ आकर पक्षियों के उस जोड़े में से एक नर पक्षी को महर्षि के समक्ष ही बाण से मार डाला। वह पक्षी खून से लथपथ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और पंख फड़फड़ाता हुआ तड़पने लगा । अपने पति की हत्या हुई देख उसकी भार्या क्रौंची करुणाजनक स्वर में चीत्कार कर उठी-

तस्मात् तु मिथुनादेकं पुमांसं पापनिश्चयः ।

जघान वैरनिलयो निषादस्तस्य पश्यतः । ।

तं शोणितपरीताङ्ग चेष्टमानं महीतले ।

भार्या तु निहतं दृष्ट्वा रुराव करुणां गिरम् ।।

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

निषाद द्वारा मारे गये उस नर पक्षी की यह दुर्दशा देख धर्मात्मा महर्षि का हृदय करुणा से द्रवित हो शोकाकुल हो गया । स्वभावतः करुणा का अनुभव करने वाले ब्रह्मर्षि के मुख से रोती हुई क्रौंची को आश्वस्त करने के उद्देश्य से अकस्मात् यह श्लोकात्मक वाग्-वैखरी प्रस्फुटित हुई—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ।।

निषाद तुझे नित्य निरंतर कभी भी शान्ति न मिले, क्योंकि तुमने इस क्रौंच के जोड़े में से एक की, जो काम से मोहित हो रहा था, बिना किसी अपराध के ही हत्या कर डाली । ऐसा कहकर जब उन्होने इस पर विचार किया तब उनके मन में यह चिन्ता हुई कि अरे यह क्या कर डाला ।

पुनः अपने शिष्य से बोले - तात ! शोक से पीड़ित हुए मेरे मुख से जो वाक्य निकल पड़ा है, यह चार चरणों में आबद्ध है । इसके प्रत्येक चरण बराबर अक्षर हैं । यानि आठ-आठ अक्षर हैं । इसे वीणा के लय पर भी गाया जा सकता है, अत: यह वचन श्लोकरूप अर्थात् श्लोक नामक छन्द में आबद्ध काव्यरूप होना चाहिए-

पादबद्धोऽक्षरसमस्ततन्त्रीलयसमन्वितः ।

शोकार्त यस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा । ।

मुनि की यह उत्तम बात सुनकर उनके शिष्य भरद्वाज को बड़ी प्रसन्नता हुई और बोले— 'हाँ आपका यह वाक्य श्लोकरूप ही होना चाहिए ।' शिष्य के इस कथन से मुनि को विशेष सन्तोष हुआ

सम अक्षरयुक्त चार पादों से मण्डित यह श्लोक संस्कृत काव्य-कुमार का उदय है । महाकाव्य की परम्परा का यही मूल स्रोत है । शिष्यों सहित तमसा के तट से वापस आकर आसन पर बैठे हुए महर्षि का ध्यान उसी श्लोक की ओर लगा था। उसी समय अखिलविश्व सृष्टिकर्ता महातेजस्वी चतुर्मुख ब्रह्माजी मुनिवर वाल्मीकि से मिलने के लिए स्वयं उनके आश्रम पर आये-

आजगाम तो ब्रह्मा लोककर्ता स्वयं प्रभुः ।

चतुर्मुखा महातेजा द्रष्टुं तं मुनिपुङ्गवम् ।।

रामायण का संक्षिप्त परिचय

वाल्मीकि रामायण के प्रकरण में आजकल भिन्न-भिन्न मत द्रष्टव्य हैं । यद्यपि रामायण के अन्तरङ्ग प्रमाणों तथा वाह्य कारणों पर भी विचार करने से रामायण श्रीराम के ही समय का बना सिद्ध होता है । तथापि कुछ लोग इसे ईस्वी सन से दो चार शताब्दी की कृति मानते हैं । इसके पद विन्यास आदि को देखकर कोई पाणिनि के बाद की रचना कहता है तो कोई महाभारत के बाद की । वाल्मीकि ने स्वयं रामायण के उत्तरकाण्ड में, श्रीराम के यज्ञ में अपने हृष्ट-पुष्ट दो शिष्यों अर्थात् कुश और लव से कहा- तुम दोनों भाई एकाग्रचित्त हो सब ओर घूम-फिर कर बड़े आनन्द के साथ सम्पूर्ण रामायण काव्य का गान करो। इससे सिद्ध होता है कि रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के समय में ही की थी । यह भी प्रसिद्ध है कि महर्षि व्यास जी ने युधिष्ठिर के अनुरोध से वाल्मीकि रामायण पर एक व्याख्या लिखी है। इसकी हस्तलिखित एक प्रति आज भी प्राप्त है जिसका नाम 'रामायणतात्पर्यदीपिका' है । इसका उल्लेख दीवान बहादुर रामशास्त्री ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन रामायण' के द्वितीय खण्ड में किया है ।' अग्निपुराण में भी वाल्मीकि के नामोल्लेखपूर्वक रामायण सार का वर्णन है ।और उसकी प्राप्ति से सन्तप्त युधिष्ठिर को उनकी इच्छानुसार मार्कण्डेय उनको रामचरित सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त रामायण एवं महाभारत के सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर भी रामायण महाभारत से पूर्ववर्ती सिद्ध होता है ।

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

वाल्मीकि पाणिनि के पूर्ववर्ती थे या परवर्ती इस विषय में मतभेद है। यदि वाल्मीकि पाणिनि से पूर्ववर्ती थे तो उनका उल्लेख पाणिनि को करना चाहिए था । क्या यह सम्भव है कि सर्वोत्कृष्ट काव्यकर्त्ता वाल्मीकि को विस्मृत किया जा सकता है ? इस सम्बन्ध में याकोबी विस्तृत वर्णन करते हुए वाल्मीकि को पाणिनि का पूर्ववर्ती ही मानते हैं । वाल्मीकि पूर्ववर्ती इसलिए थे कि पाणिनि ने कौशल्या, कैकय, सरयू आदि का उल्लेख किया है किन्तु वाल्मीकि एवं रामायण का नहीं । यदि वाल्मीकि परवर्ती थे तो उन्होंने पाणिनि के व्याकरण नियमों का पालन क्यों नहीं किया ?' कृर्मि एवं दुंदुभि का अपाणिनीय प्रयोग क्यों किया ? इसके समाधान में कहा है कि ऋषि किसी नियम से बद्ध नहीं होता । उस समय संस्कृत भाषा अधिक रूढ़िग्रस्त न रही होगी । दुंदुभि तथा कृर्मि जैसे प्रयोगों को अशुद्ध न समझा जाता रहा होगा ।

स्कन्दपुराण में श्रीव्यासदेव जी ने वाल्मीकि की जीवनी भी बड़ी श्रद्धा से लिखी है ।' विस्तृत रूप से आध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड में वाल्मीकि रामायण का वर्णन किया गया है । भार्गवसत्तम कहकर मत्स्यपुराण में भी वर्णन किया गया है।' कवि कुलगुरु ने रघुवंश में आदिकवि का स्मरण किया है ।

निष्कर्ष

रामकथा भारतीय जनजीवन में पूर्णतः परिव्याप्त है । राम के चारित्रिक गुणों का महत्व जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है । इस कथा का विशद एवं व्यवस्थित रूप आदिकवि वाल्मीकि की रचना रामायण में उपलब्ध होता है । वाल्मीकि ने राम जैसे उदार और पावन चरित्र को काव्य का आश्रय बनाकर भारतीय संस्कृति में एक नया मोड़ नहीं दिया अपितु एक ऐसे साहित्य के अविरल प्रवाह को प्रवृत्त किया है, जो आज भी निर्बाध गति से प्रभावित हो रहा है रामायण के माध्यम से ही राम का महान व्यक्तित्व इतनी महती रोचकता और लोकप्रियता को प्राप्त हुआ कि भारतीय जनमानस तो राममय हुआ ही साथ ही इसने विदेशियों तथा उनके साहित्य को भी प्रभावित किया है ।

वाल्मीकि के ही समय में रामकथा सम्बन्धी कथानक का पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार हो चुका था। अतएव वाल्मीकि ने तत्कालीन प्रचलित आख्यानों एवं पुरावृतों को ही आधार मान कर रामायण की रचना की है । हनुमान जी का इसमें प्रत्यक्ष रूप से विशेष स्थान रहा है । आदिकवि वाल्मीकि की कृति संस्कृत साहित्य की धरोहर है ।' रामायण एवं महाभारत ऐसी कृतियाँ हैं, जिनके प्रभाव से संस्कृत साहित्य का शायद ही कोई ऐसा कवि हो जो विरत रहा हो । ये दोनों कृतियाँ भारतीय संस्कृति एवं साधना के शाश्वत मूल्यों के जीवन्त निदर्शन हैं।

सन्दर्भित ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकीय रामायण
2. उपलब्ध पुराण साहित्य
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास - आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - वाचस्पति गैरोला
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी
6. महाभारत - श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास
7. रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास
8. भगवतीभाष्य वाल्मीकीयरामायण - जगदीश्वरानन्द
9. जातक साहित्य - दशरथ जातक, अनामक जातक और दशरथ कथानक
10. हेमचन्द्र कृत - जैन रामायण
11. कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य
12. प्रमुख रामकथाश्रित नाटक - भास कृत - प्रतिमा नाटक एवं अभिषेक नाटक
13. प्रमुख रामकथाश्रित नाटक - भवभूति कृत - महावीर चरित
14. प्रमुख रामकथाश्रित नाटक - अनंग हर्ष मयुराज कृत - उदात्त राघव
15. प्रमुख रामकथाश्रित नाटक - राजशेखर कृत - बालरामायण

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*

16. प्रमुख रामकथाश्रित नाटक - दामोदर मिश्र कृत- महानाटक
17. कामिल बुल्के कृत - रामकथा

Jitendra Kumar, *M.Phil, Roll No. :150614, Session : 2015-16, University Department of Sanskrit, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, E-mail: jitendrapress5@gmail.com*